राम विजय नाट

श्लोक

यन्नामाखिल लोक शोक शमनं यन्नाम प्रेमास्पदम् ।
पापापारपयोधि तारणविधौ यन्नाम पीनप्लवः ।
यन्नाम श्रवणात् पुनाति श्वपचः प्राप्नोति मोक्षं क्षितौ ।
तं श्रीराममहं महेश वरदं वन्दे सदा सादरम् ॥

अपिच

येनाभाजि धनुः शिवस्य सहसा सीता समाश्वासिता ।
येनाकारि पराभवो भृगुपतेर्व्वासक्त रामस्य च ॥
वैदेहीं विधिवद्विवाहमकरोत् निर्जित्य यः पार्थिवान् ।
युष्माकं वितनोतु शं स भगवान् श्रीरामचन्द्रश्चिरम् ॥

गीत

राम सुहाइ—एकतालि ।

ध्रु०—जय जग जीवन राम । कयलो पड़ि परणाम ॥

पद०—याहे नाम गुणमुहे गाइ । पापी परम पद पाइ ॥
ओहि भवताप आपारा । याहे स्मरणे कह पारा ॥
अजगव भञ्जनकारी । पावल जनक कुमारी ॥
नृप सब छेदल प्राणे । कृष्ण किङ्करे एहु भाणे ॥

नान्द्यन्ते सूत्रधारः । अलमति विस्तरेण । प्रथमं माधवो-माधव इत्युक्त्वा श्रीरापचन्द्रं प्रणम्य सभासदः सम्बोध्य आह ।

श्लोक

भो भोः सामाजिक यूयं श्रृणुध्वमधुना बुधा ।
श्रीराम विजयं नाम नाटकम् मोक्षसाधकम् ॥

भटिमा

जय जय रघुकुल कमल प्रकाशक दासक नाशक भीति ।
जय जय निजजन पालन घालन पातन पातक रीति ॥

हरक शरासन नाशन शासन नृप सब बाण सन्धाने ।
छेदल भेदल वेदल दापे तापे पलावत प्राणे ॥
भृगुबर रामक रामक कामक कयलि दरप उपान्त ।
भवभय भञ्जन सज्जन रञ्जन जीवन जानकी कान्त ॥
योहि बनमाली बालिक घालि राजा करू सुग्रीव ।
याहेरि कोप कटाक्ष निरिखि कम्पित जलधिक जीव ॥
समरक नागर नागर सागर शिला सेतु कय बन्ध ।
भकता भीता सीता नीता युद्धे बधिये दश कन्ध ॥
साफलल बाणी जानि आनि थापि विभीषण पाट ।
यत आतङ्का लङ्का शङ्का कयलि पुनु उतपात ॥
जगतक अन्तक सन्तक तन्तक पूरल परमा काम ।
भूमिक भार उतारल तारल सुरनर राजा राम ॥
ब्रह्मा महेश्वर किङ्कर याकर पड़ि पड़ि करतु सेवा ।
त्रिभुवन कारण तारण मारण योहि देवको देवा ॥
सोहि महेश्वर रामक नाटक शुन सब कय विशोआस ।
याहेर कथने कथने करइ कलिमल सकले विनाश ।
असारत सारत कारत भारत नरतनु विफलेहि थाइ ।
पद अरविन्द अनिन्द गोविन्द हृदि पङ्कज धरु भाइ ॥
धन जन जीवन यैवन बिजुरि उजुरि देख ने देखा ।
जानव केशव देवक सेवा सोहि शिला करि देखा ॥
सब अपराधक बाधक साधक सिद्धि ऋद्धि हरि नाम ।
कहे कृष्ण किङ्कर लोक निरन्तर डाकि बोलहु राम राम ॥

सूत्र० —भो भो सभासद ! साधुजन ! ये जगतक परम ईश्वर नारायण भूमिक भार हरण निमित्त दशरथ गृहे अवतरल सोहि भगवन्त श्रीराम रूपे ओहि सभामध्ये प्रवेश कयकहु सीता विवाह विहार नित्य परम कौतुके करब; ताहे सावधाने देखहु शुनहु ।

प्रथमे लक्ष्मण सहित श्रीराम प्रवेश । तदनन्तर सखी सब सहित सीताक प्रवेश । इति ज्ञात्वा सर्व्वे सावधाने स्थीयताम् ।

सूत्र० —आहे सङ्गी, कि वाद्य शुनिये ?

सङ्गी—सखि ! देव दुन्दुभि बाजत । अः श्रीरामचन्द्र मिलल ॥

श्लोक

प्रवेशमकरोत् कामं रामो राजीव लोचनः ।
ससोदरो धनुः प्पाणी रूपेणाप्रतिमो भुवि ॥

सूत्र०—आहे सभासद ! याकर कथा कहैछि से श्रीराम लक्ष्मण सहित ए आवत ।

गीत

राग सिन्धुरा—एक तालि

ध्रु० - भेलि परवेश परमेश रघुनाथे । सङ्गे सोदर शरधनु धरि हाते ॥
पद - श्याम रुचिर चिर पीत परकाश । पङ्कज नयन बयन मन्द हास ॥
मणिमय मुकुट कुण्डल गण्डे डोले । हेरि मुरति मन मनमथ भोले ॥
माणिक मोति ज्योति हेम हारा । गगण इजोर यैचन रुचि तारा ॥
चरणक रञ्जि मञ्जिर मणि रोल । कृष्ण किङ्करओहिशङ्कर बोल ॥

सूत्र० —ओहि परकारे श्रीरामचन्द्र प्रवेश कय एक पाश हुया रहल । तदन्तर सीताक प्रवेश शुनहु । आहे सङ्गी, किवाद्य वाजे ?

सङ्गी—अः देववाद्य बाजे ।

सूत्र० - अः जनक नन्दिनी सीता सखी सब सहित मिलल मिलल ।

श्लोक

चकार जानकी कामं प्रवेशं सखी सङ्गता ।
चिन्तयन्ती रामचन्द्र चरणौ रुचिरानना ॥

सुत्र० —हे सामाजिक, सखी मदनमन्थरा कनकावती सहित जनकनन्दिनी सीतारामक चरणा चिन्ति प्रवेश कय आवे । आहे देखहु निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग सुहाइ—एकतालि ।

ध्रु० —आये जनक सुता कय परवेश । पेखिये बदन मदन मन क्लेश ॥
पद —माणिक मुकुट कुण्डल कत कान्ति । दसन औतिम नव मोतिम पन्ति ॥
हसतू हासि चान्दक रुचि छोड़ । नील अलका लोल लोचन चकोर ॥

कङ्कण कनक केयूर झनकाइ। रामक चरण चिन्तिये चित लाइ॥
पदपङ्कज मणि मञ्जिर रोल। रूपे भुवन भुले शङ्करे बोले॥

सूत्र०—हे सामाजिक लोक ! से जनकनन्दिनी सीता सखी सब सहिते नृत्य करिये से जातिस्मर कन्या पूर्व्व जनमक कथा चित्त परल। ताहें सुमरि परि क्रन्दन कय रहल। ताहे देखि सखी मदनमन्थरा, सखी कनकावती बहु मेलि धरि पुछत।

सखी— आहे सखी, तुहु राजनन्दनी, कोन सम्पति नहि थिक। कि निमित्ते तो ह्रो बारम्बार विलाप करह ?

सखी— प्राण सखी, हामाक शपत, तोहार पावे लागु हामात सत्तर कथा कह।

श्लोक

ततः सीता विनिःश्वस्य चरितं पूर्व्व जन्मनः।
सखीभ्यां वर्णयामास रुदती सुदती सती॥

सूत्र०—सीता कति बेलि स्वस्थ हुया आञ्चोरे आंखि मुख मुचि विश्वास फोकारि सखी सबक सम्बोधित वचन बोलये लागल।

सीता—आहे सखी सब ! परम अभागिनीक की पूछह ? हामु पुरब जनम ईश्वर नारायणक स्वामी इछा कयल। अनेक काय क्लेश करिये बहुत वरिषत तपस्या कयलो। तदन्तरे आकाशी वाणी शुनल "आहे कन्या, तोहो ओहि जनमे स्वामीक भेट नाहिपावब। आर जनमे श्री रामरूपे तोहोक विवाह करब।' इहा जानि हामु अगनि प्रवेशि प्राण छाड़ल। आहे सखी सब, से दैव वाणी विफल भेल; से श्रीराम चरण ओहि जनमे भेंट नाहि भेलो।

सूत्र०—ओहि बुलिते सीताक परम सन्ताप उपजल। हा राम स्वामी बुलि मोह हुया माटि लोण्टि यैचे विलाप कयल ताहे देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग सुहाइ-चुटकला।

ध्रु०—विलपति मैथिलि माइ नीर नयन झुराइ।
घन घन स्वास फोकारत तनु चेतन नाई॥

पद०—चिर विरहे बहे देहा दिश देखु अन्धियारि।
रमया बिने मन झामर परमरुचिकुमारी।
हा हरि हरि जम्पय जीव यैचे नायाइ।
राम चरणे लागु गति आवरि नाइ॥

सूत्र०—ऐचन सीताक विलाप देखिये सखी सब प्रबोध बोलल।

सखीसब-आहे प्राण सखि ! से भकतक बान्धव माधव तोहाक दुख दूर करब। पुरब जनमक तोहार स्वामी अवश्यक भेंट पावब। हे सखी, ताप छाड़ह।

सूत्र०—हे सामाजिक लोक ! जनकनन्दनी सीता किञ्चित् स्वस्थ हुया सखी सब सहित एक पाश हुया रहल। तदन्तर दशरथ राजाक प्रवेश देखह।

श्लोक

प्रविवेश महातेजा राजा दशरथस्तदा।
छत्र चामर संयुक्तो धनुष्पाणिर्नृपोत्तम॥

गीत

राग कानाड़ा-परिताल।

ध्रु०—आये दशरथ पृथिवी नाथ। ढुले चामर छत्र धरु माथ॥
पद—दुर्ज्जय वीर धरिये शर चाप काम्पे रिपुसब याहे प्रताप॥
त्रिभुवन ईश्वर रामक बाप। याहे हेरि दूर होयब पाप॥

सूत्र०—ऐचन प्रवेश कये राजा दशरथ परम हरिषे बैठि रहल।

श्लोक

शिष्येण साकमागत्य विश्वामित्रो महामुनिः।
आशीर्व्वाद ददौ तस्मै राज्ञे मन्त्रमुदीरयन॥

सूत्र०—तदनन्तर ऋषिराज कौशिक शिष्य सहिते आसिकहु राजा दशरथक आशीर्व्वाद करिये ये कहल, ता देखहु शुनहु। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग कनाड़ा-परिताल।

ध्रु०—आवत कौशिक चण्ड। माला माथे हाथे धरु दण्ड॥

पद—लाड़य बाहु हरि गुण गाइ। सचकित नयन चतुर्दिके चाइ ॥
शोभे सुललित तिलक कपाल। हेरत कोपे यैसे यम काल ॥

सूत्र०—ऐचन प्रवेश बिरे ऋषिराज राजाक आशीर्व्वाद कयल।

श्लोक

चिरञ्जीव चिरञ्जीव चिरञ्जीव जनाधिप।
पुत्र पत्नी समायुक्तः भक्तिमान् भव माधवे ॥

कौशिक—हे राजा दशरथ ! तोहो सपरिवारे चिरञ्जीव भव।

सूत्र०—राजा ऋषिक आसने बैठाया परि परणाम कय कर योरे बोल।

दशरथ—हे मुनिराज ! तोहारि पद परशे आजु हामार अयोध्या पुर पवित्र भेल। तव दरशने आमार जनम सफल भेल। मुनि अब कोन प्रयोजन साधो; हामाक आज्ञा करह। सभामध्ये सत्य अङ्गीकार कये बोलली— आजु ये दान मागह, तोहोक सत्ये सत्ये देवबो।

कौशिकऋषि—(राजाक वाणी शुनि हासि कौतुके उठिकहु नृत्य कयल) अाः मनोरथ साफल भेल। (राजाक आशीर्व्वाद क॰ बोलल) हे नृपते ! तोहो पृथिवीक कल्पतरु ! तोहार ठाइ प्रार्थक कबहु विमुख नाहि इहा जानो, किन्तु हामार प्रार्थना शुनह। हामु सिद्धाश्रमत यज्ञ आरम्भल। ताहेक मारीच सुबाहु दोहो राक्षस बिघिनि आचरय। से यज्ञ रक्षा निमित्त तोहार राम लक्ष्मण दोहो कुमारक हामार सङ्ग पठाव, तबे हामार मनोरथ सिद्ध हय।

श्लोक

तन्निशम्याभवद्भीतः पपात मूर्च्छितो भुवि।
करोति कातरं राजा विधृत्य चरणौ मुनेः।

सूत्र०—राजा ऋषिक ऐचन वचन शुनिये दुरन्त चिन्ताये पीड़ल। मूर्च्छित हुया पड़ल। तदनन्तरे स्वस्थ हुया ऋषिक चरणे धरिकहु कातर कय बोल।

दशरथ—आहे मुनिराज ! हामार पुत्र राम लक्ष्मण से बालक। ताहेक राक्षसक दिते चाव ! ओहि कोन व्यवहार ! हा हा हे ऋषिराज, यज्ञ रक्षा निमित्ते हामाक निया याव।

सूत्र०—राजाक वचन शुनिये कौशिक परम कोपे भरचय।

कौशिक—अये असत्यवादी। राम लक्ष्मनक नाहि पठायव ?

सूत्र०—ओहि मुनि कोपे कम्पमान हुया वेगे चलल। बाहु लाड़िये कोपे चर्व्वय। राजा आगु हुया ऋषिर चरण धरि कहु यैचे विलाप कयल ता देखह शुनह। निरन्तरे हरिबोल हरि।

गीत

राग सुहाइ—यति ताल

ध्रु०—करहु करुणा ऋषि सुत दान देहु।
कोन मुहे कहब रामक तुहु लेहु ॥

पद—नेहवि राम राक्षस लागि मागि। ताहे अधिक हृदये दहे आगि ॥
बालक राम किछुवे नाहि जाने। ताहे नाहेरि रहबि नाहि प्राणे ॥

दशरथ—बालक राक कैछे राक्षसक हाथे दिते चाव ? इहा उचित नोहे। बाप ! रामक छाड़ि हामाक निया याव।

ऋषि—अये दशरथ ! तुहु रामक चरित्र किछु जानये नाहि। योग बले हामु सये जानो। ओहि रामचन्द्र परम ईश्वर महा हरिक अंश अवतार। असुर राक्षस मारि भूमिक भार उतारव। इहा जानि किछु चिन्ता नाहि करवि। सत्य राखि सत्वरे राम लक्ष्मणक हामार सये पठाव।

सूत्र—राजा ऋषिक वाणी शुनिकहु किञ्चिन्मात्र स्वस्थ हुया ऋषिक हाते राम लक्ष्मणक समपि देलह कौशिक कौतुके राजकुमार दोहो संगे लैया यैचे चलल, ता देखह शुनह; निरन्तरे हरि बोल हरि।

पयार

राग कानाड़ा

चलल कौशिक साधिये काम। पाछु पाछु चलल लक्ष्मण राम ॥
देखहु धनुक दिव्य बाण। लक्ष्मण राम पेलहि सब जान ॥
आश्रम याइते ऋषिक उचाट। पेखिये ताड़का बेड़ल बाट ॥
मिलिल भक्ष्य पिशाचिनी हासे। काम्पे कौशिक पड़िये तरासे ॥
राक्षसी खाइ राख रघुनाथे। शुनिये राम धरल धनु हाते ॥
चुनिये निर्भय जोरल बाण। ताड़का हृदये करु सन्धान ॥

पड़ल पिशाची तेजि आहास । वज्रपाते वैछे लोक तरास ॥
हृदये आनन्द मिलित अधिक । साधु साधु रामक बोल कौशिक ॥
हरिषे शिहरे देहक लोम । आश्रम पाइ आरम्भल होम ॥
देखिये धूम मारीच सुबाहु । चान्द गिलिते यैछ आवल राहु ॥
त्रासे कौशिक कहय आराबे । पेखु पेखु दोहो राक्षस आबे ।
अब रघुनाथ करहु मोहि त्राण । शुनिये राम धरल धनु वाण ॥
बिधल हृदय मरमक सन्धाने । उड़ल राक्षस रामक वाणे ॥
भेलि सुबाहु सागरत पात । मारीच प्राण पड़ल लङ्कात ॥
नाश गेल अवदोहो पिशाचे । कौतुक उठि कहु कौशिक नाचे ॥
रामक रङ्गे साधु साधु बोल । जय जय राम करथ घनरोल ॥

सूत्र०—परम सन्तोषे कौशिक रामक आशीर्व्वाद कयल ।

श्लोक

जयतु जयतु रामः पार्थकत्राण हेतुः रघुकुल कमलाली सूर्य्य वंशस्य देवः
हरतु दुरितमेषां नाम सङ्कीर्त्तनैः यः स्वजन सुत कलत्रैः जीवतु सः चिरायुः ॥

कौशिक—रघुकुल कमल प्रकाशक सुर्य रामचन्द्र हामार आशीर्व्वादे परनी पुत्र सहित चिरजीवी भव ।

सूत्र०—ओहि बुलि आशीर्व्वाद तुलसी देहल । श्रीराम माथा पाति लेलहु ।

कौशिक—हे बाप रामचन्द्र ! तुहु हामरा परम उपकारी । मारिच सुबाहु राक्षस मारि हामार यज्ञ सिद्ध कयल । तोहाक गुण सुजये नाहि पारि । सम्प्रति प्रत्युपकार तोहोक का करब ।

सूत्र०—ओहि बुलि ऋषि मने विमरिष कय पुनु बोलल ।

कौशिक—आः साधु प्रयोजन मिलल । हे रघुनाथ ! आजु जानकी सीताक स्वयम्बर मिलिछे । हामु जानल, महेशक धनु ये गुण दिते पारब से कन्या सोहि पाबे । से भुवन दुर्ल्लभ भाग्यवती यब तब गृहिणी हय हामार परम आनन्द मिलल । हामु योगबले जानो सोहि सीता पूर्व्व जनमत बहुत तप आचरि तोहोक स्वामी न पायल । ताहेक स्मरिये ओहि जनमे तोहार चरणचिन्ति सर्व्वथा थिक । परम विरहातुर हुया तोमाक लागि रहैछे । हे सुन्दरीक रूप सम्प्रति कहब ताहे शुनह ।

भटिमा

कि कहब रूप कुमारीक राम । कनक पुतलि तुल तनु अनुपाम ॥
रतन तिलक लोले अलक कपोल । हेरिये भ्रूभङ्ग त्रिभुवन भोल ॥
देखिये वदन चान्द भेलि लाज । नयन निरिखि कमल जल माज ॥
हेरिये भुज युग मिलल उछङ्क । ललित मृणाल भजल जलपङ्क ॥
आरतक करतल मुनिमन मोहा । कनक शलका आङ्गु कर शोहा ॥
बन्धुलि अधिक अधर अरु कान्ति । डाड़िम निबिड़ बीज दन्त पान्ति ॥
इषत हासि मदन मोह याइ । नाशा तिलफुल कमलिनी माइ ॥
नवयौवन स्तन बदरी प्रमाण । उरु करिकर कटि डम्बरुक ठान ॥
पद पल्लव नव पङ्कज कान्ति । चम्पक पापरि आङ्गुलिक पान्ति ॥
नखचय चारु चान्द परकाश । लहु लहु मत्त गज गमन विलास ॥
कत लावण्य विधि निरमिल जानि । कोकिल नाद अमिया जुरे वाणी ॥
तुहु सुकुमार रूपे नोह हीन । राज कुमारीक वयस नवीन ॥
सोहि वर रमणी घरणी यब हुइ । तब गृहवास साफल तब हुइ ॥
कहलों स्वरूप वचन श्रीराम । चलय अविलम्ब जनकक ठाम ॥
भाङबि अजगव धनुक लोभाये । शुनि सीता भजब तुवा पाबे ॥
जानि हामि सत्य वाणी बोल । डाकि करहु नर हरि रोल ॥

श्लोक

सीतायाः रूपलावण्यं एवं निशम्य राघवः ।
ऋषिमाभ्याष्य भगवन् जगाम मिथिलां प्रति ॥

सूत्र०—सीताक रूप सम्प्रति शुनिये रामक मने किञ्चित भावान्तर मिलल । जानकी वियोग निमित्त निश्वास फोंकारि ऋषिक सम्बोधित बोलल ।

श्रीरामचन्द्र—हे महा मुनिराज, से महेशक धनु वज्राधिक कठिन, ताहेक गुण दिते हामार योग्यता कैचन हय ? तथापि तोहार आज्ञा पालिते लागय ऋषिराज, जानि सत्वरे चलह ।

सूत्र०—उहि बुलि सोदर सहित ऋषिक साथु श्रीराम वैछे मिथिला चलल ताहे देखह शुनह, निन्तरे हरिबोल हरि ।

गीत

राग माहुर—यति मान

ध्रु० —रमया चले मिथिलाक लाइ।
राजीव लोचन श्याम सुन्दर सोदर सङ्गहि याइ।

पद —शुनिये रामर्णाक काहिनी मिलल मोह मुरारि ॥
भाव भिन्न रीत भेलि किञ्चित चित्त मदन बिगारि ॥
वदन इन्दु मदन झामर काम पहिल प्रवेश।
चलतु राघव काम कौतुक हरतु केशव क्लेश ॥

सूत्र० —तदनन्तर मिथिलापुर पाइ ऋषि सोदर सहिते श्रीरामचन्द्र राज सभा प्रवेश कयल। जनक राजा उठिकहु राम लक्ष्मण सहित विश्वामित्र एक आसने बैसाइ ऋषित प्रणामि स्तुति बोलल।

जनक —हे ऋषिराज, तोहारि आगमने आजु हामार मिथिलापुर पवित्र भेल मोरि महाभाग्य मिलल।

सूत्र० —ऋषि आशीर्व्वाद श्लोक पढ़ल।

श्लोक

ऋषि —चिरञ्जीव चिरञ्जीव राजन् सज्जन रञ्जन।
गज-वाजी-महैश्वर्य-भार्य्यात्मज युतः सदा ॥
हे महाराज जनक, पुत्र पौत्र सहित तोहो चिरकाल सुखी हव।
तोहार सत्कारे परम सन्तोष भेलों।

सूत्र० —जनक राजा राम लक्ष्मण रूप निरेखि परम आश्चर्य हुया मुनित पूछत

जनक —हे ऋषिराज, उहि बालक दोहों। अद्भुत मधुर मरति देखि परम आनन्द भेलों। काहेर कुमार, किब देव, किवा मनुष्य हामु बूजये नाहि पारि। उहि सुकुमार कुमार दोहोक देखि हृदय सन्तोष भेलों।

सूत्र० —ताहे शुनि ऋषि श्लोक पढ़ल।

श्लोक

विश्वामित्र —सुतौ दशरथस्यैतौ आगतौ राम लक्ष्मणौ।
दुहितुस्तव सीतायाः स्वयंवर दिदृक्षया ॥
हे महाराज तोहारि परिचय नाहि। ये दशरथ राजा तोहार परम मित्र ताहेर कुमार दोहो हामार परम शिष्य। आरासबर नाम राम

लक्ष्मण। तोहारि दुहिता सीतार स्वयम्बर देखिते इहा आवलो इहा जानि सत्वरे समाज मिलाइ महेशक धनु आनहु।

सूत्र० —जनक राजा महाहर्षे राम लक्ष्मणक आलिङ्गि, बोलल।

जनक —आः धन्य धन्य दशरथ राजा। ऐचन परम सुकुमार कुमार ताहेर गृहे ताहेर भाग्यक महिमा कि कहबे।

सूत्र० —सेहि बुलि राजा परम उत्सवे शङ्ख शबदे सम्वाद नाद बहुत बजावल। मणिमन्त्र मन्त्रीक आदेश कयल।

जनक —एये मणिमन्त्र, ये नृपति सब बासा करि रहैछे ताहेक सत्वरे आनि समाज मिलाव।

सूत्र० —इति श्रुत्वा मणिमन्त्र निष्क्रान्तः।

श्लोक

निशम्य परमा रामा रामागमन कौतुकम्।
सखी सम्प्रेषयामास जानकी कनकावतीम् ॥

सूत्र० —तदन्तरे ढोल, डङ्का, शङ्ख, गोमुख, मृदङ्ग, ताल, करताल, काहाल कोलाहल महोत्सव रव शुनि जानकी सखीक सम्बुद्धि बोलल।

सीता —आहे कनकावती, कि निमित्ते सभात हरिष बाजन शुनिये? कोन राजा आवल सत्वरे जानगिया। हामार बाम अङ्ग फन्दे। कोन कुशल कहे, इहा जानये नाहि।

श्लोक

तस्याः कथामाकर्ण्य कौतुकात् कनकावती।
ययौ राजसभां साध्वी सीतां नत्वाति सत्वरम् ॥

सूत्र० —सीताक ऐचन आदेश शुनिकहु कनकावती सीताक परणाम कय यैचे चलल ता देखह शुनह; निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

रागधनश्री—एकताली

ध्रु० — कौतुहले चले मायि। राम परिचये लाइ।
कामिनी कनकावती। याइ राजहँस गति ॥

पद — पावे सभाक सती। देखल रघुपति ॥
यैचन गगन माज। उदित नक्षत्र राज ॥

पेखि रूप लावणु। भेलि पुलकित तनु ॥
झुरे नयनक नीर। तनु मन नोहे थिर ॥

सूत्र०— सभामध्ये रामक रूप लावण्य देखिये परम विस्मित हुया सीताक आगु गिया कनकावती परि परणामि बोलल।

कनकावती—आहे प्राणसखि ! तोहार महोदय मिलिल।

सीता— हे प्राणसखी ! तोहो कि देखल, कि शुनल सत्वरे कहा।

कनकावती—आहे जनकनन्दिनी ! तोहो याहेर निमित्त प्राण राखह, सोहि दशरथ राजकुमार कोटि कन्दर्प दर्प दलन रूप श्रीरामचन्द्र तोहारि स्वयम्वर शुनिये आवल। ताहे देखि राजा जनक आनन्दे दुन्दुभि वजावल। हे सखि, रामक कि आश्चर्य मानुष रूप की कहवों; एक अङ्गक लावण्य शत वरिखे कहिते नाहि परि। सखि ! तथापि किछु कहछि ता शुनह।

भटिमा

शुनि सखि वचन स्वरूप। कि कहव रामक रूप।
श्याम मुरति पीतवास। घने यैचे बिजुरि विकाश ॥
मस्तक छत्रक वेश। नील आकुञ्चित केश ॥
रुचिकर कर्ण अतुल। नासा नील तिल फुल ॥
वदन इन्दु परकाश। अरुण अधर मन्द हास ॥
शोभित दशनक पान्ति। माणिक झिकमिक कान्ति ॥
मदन धनु भ्रुव भङ्ग। भुज युग वलित भुजङ्ग ॥
नयन पङ्कज नव पाता। करतल उतपल राता ॥
आङ्गुलि ललित अमूल। नखचय चान्दक तुल ॥
सुन्दर उदर कटि बन्ध। शोहे सिंहबन्ध कन्ध ॥
उरु करि कर निरुपाम। चरण कमल केश श्याम ॥
पदतल रातुल कान्ति। ध्वज यव पङ्कज कान्ति ॥
मानुष ऐचन रूप। नाहि शुनि कहलो स्वरूप ॥
नवीन वयस सुकुमार। भेलि नारायण अवतार ॥
किनो भेलि भाग्य तोहारि। तुहु नव तरुणी कुमारी ॥

विधि मिलावल आनि। तेरि मनोरथ जानि ॥
अब सब पुरब आस। विरह दुख गेल नाश ॥
पावल स्वामीक कोल। कर नर हरि हरि रोल ॥

कनकावती– आहे सखि ! यैचन महापुरुष लक्षण देखल हामु जानल ओहि ईश्वर नारायण; श्रीरामरूपे तोहार विवाह हेतु आवल। इहात किछु शङ्का नाहि करवि। सखी ! तोहार मनोरथ साफल भेल।

श्लोक

श्रुत्वा सखी मुखाद्रामचन्द्रस्य चरितामृतम्।
मूर्च्छिता पतिता सीता सुमहा हर्ष धर्षिता ॥

सूत्र०—स्वामीक परम चरित्र शुनिये सीता महा हर्षान्विता हैया पड़ल। यैचे प्रेमरसे महा आकुला भेलि ता देखह शुनह, निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग धनश्री-एकतालि

ध्रुव०– स्वामीक चरित्र शुनिये कुमारी।
भेलि पुलक तनु चेतन आकुल, कमल नयन झुरे वारि ॥

पद– राम चरण चित्त थिर चिन्तिये, नयना मुदि रहु माइ ॥
प्रेम परश रस राजनन्दिनी यैच मानस अमिया जुराइ ॥
याहे विरह दहे रहैना जीवन सो पिउ पावल कोल ॥
आनन्द सिन्धु मगन मन कामिनी, कृष्ण किङ्कर ओहि बोल ॥

सूत्र०–सखि कनकावती, मदनमन्थरा सीताक धरिकहु आञ्चोरे अङ्ग मुछि प्रबोध बोलय।

कनकावती–हे प्राण सखि ! तोहो याहेर चरण चिन्ति चिरकाल रहैछ, से रामचन्द्रक विधि हाते मिलावल।

मदनमन्थरा–हे सखि ! आनन्द समये तोहो कि निमित आकुल भेलि ? हे माध्वि ! स्वस्थ हव।

सूत्र०–सखी सबक वाणी शुनि सीता आकुल भाव तेजि रामक चरण चिन्तिये एक पाश हुया रहल।

श्लोक

ततो नृपान् यथानीय मणिमन्तो नृपाज्ञया ।
कारयामास महतीं सभामुत्सवशोभिताम् ॥

सूत्र०—तदन्तर मणिमन्त्र मन्त्री राजासबक आनिये यैचे महा सभा मिलावल ता देखह सुनह, निरन्तरे हरि बोल ।

गीत

राग कनाड़ा—परिताल

ध्रु०—आवे नृप सब धरु धर चाप । काम्पे धरणी परम प्रताप ॥
पद—बाहु काण्डे खाण्डा उड़िहाते । दशन कामुरि अङ्कुरय माथे ॥
दर्पे करन्त धर मार रोल । आवल राजसभा केरि कोल ॥

सूत्र०—से राजा सब ऐचन बीभत्स भावना कय एक पाश हुया सभात बैठल ।

श्लोक

सखीभिः सकमभेद्यां जानकी जनकोऽनयत् ।
महेश धनुः स्कन्धे निधाय शोभितां सभाम् ॥

सूत्र०—तदनन्तर राजा जनक अभ्यन्तर प्रवेशिये महेशक अजगव धनु कन्धे करिये दुहिता सीताक वस्त्र अलङ्कारे मण्डित करिये सुवर्ण पंकजमाला हाते दियाकहु सखीसब सहित यैचे उत्सव उत्सुके सभा प्रवेश करावल ताहे देखह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग सुहाइ—चुटकलामान

ध्रु०—जानकी कामिनी कौतुके चलति लीलाये ।
सखी सब सङ्गे रङ्गे करतु केलि, मेलि आञ्चोले डुलावे ॥
पद— नव पिउ परश रसिक कक बाला माला करतले लोले ।
चरण रञ्जि मणि मञ्जिर झनकित कनक किङ्कुणी रोले ॥
मत्तगज गामिनी कामिनी माइ याइ निज पिउ पाशा ।
हेरिये नृपसय मदने दहतु मन कहतु कृष्णाक दासा ॥

सूत्र०—राज नन्दिनीक नव यौवन रूप लावण्य निरेखि राजा सबक काम-बाणे पीड़ल अचेतने मूर्छित हुया पड़ल। पुनु चेतन लभिये उठिकहु परम आकुल भावे सीताक कातर कय राजा सब बोलये लागल ।

एकराजा—हे प्राणेश्वरि ! काम सागरे मगन भेलो; निस्तार करह ।

अन्यराजा—(आङुलि मुखे लैया बोलल) हे राजनन्दिनी ! मदने मन मर्दय ! प्रिये ! हामाक हस्ते परख ।

आर राजा—(दशने धैर कामुरि विनये बोल) हे सुन्दरी ! मदन बाणे हामार प्राण फुटि याइ । वचन अमिया रस बरखि हामाक जीयाओ ।

आर राजा—(कामे भुलि बोलय) हामार गृहे यत महादइ थिक सब तोहार दासी देवय । हामो तोहार चरणक दास भेलो । हामार आगे खानिक लभिये । कटाक्षे निरेखि प्राणदान देह ।

सूत्र०—ऐचन कामे मत्त हुया राजा सब नाना विध बीभछ भावना करय । पेखि सीताक सखी कनकावती, मदनमन्थरा, चन्द्रावती, सूर्य्यप्रभा काहु राजाक गोड़े मारि भरचय, काहुक हाते ठेङ्गना मारय, काहुक गले वस्त्र बान्धिये दुइ तिनि सखीये घषावे, से सब मूखको न गणय । तथापि नृप कुमारीक कातर कय थिक । अये लोक, हरिक भकति हीन कामातुर पुरुषक देखह । जगतक माता जनकनन्दिनी ताहेक जानये नाहि । इहा जानि निरन्तरे हरि बोल हरि ।

श्लोक

जगाद जनको वाक्यं पश्यतैस्तद्धनुर्नृपाः ।
इदं सज्यं करोति यः तस्मै सीता समर्पये ।

सूत्र०—जनक राजा राजसभाक स्वस्थ कय बोलल ।

जनक—आहे राजासब ! हामु सत्यवाणी कहैछि ता सुनह । सीताक विवाह निमित्त चिन्तिते ओहि महेशक धनु गगण हन्ते पड़ल । तदनन्तरे आकाशीवाणी सुनलो—ओहि धनुत ये गुण दिते पारय ताहेक माथे कुसुम माला दिये सीता स्वामी वरब । इहा सत्य जानि यत्न करह ।

सूत्र०—ओहि वाक्य सुनि शतधनु नाम राजा परम आड़म्बरे काचि गिया पहिलेहि धनु धरल । दशन कामुरि गुण दिते चित हुया पड़ल । तदनन्तरे चन्द्रकेतु धनु धरि कहु कथम् कथमपि उल्लासि धनु सैते पड़ल । ताहे देखिये राजा पुरञ्जय परम आटोपे धनु धरि बाहु बले वाड़िवाक ना पारि उफरि पड़ल । तदनन्तर राजा कुमुदाक्ष कटित वस्त्र काचिवहु अधर कामरि धनुक दोपदिया

तुलि महाप्रयास पाइ विह्वेष करल। लाज होइ समजात पड़ि हात पाव आचरय।

श्लोक

राममाह मुनिर्व्वत्स ! किन्निरीक्ष्येह तिष्ठसि।
कौशल्यानन्दनोत्तिष्ठ त्वं सज्यं कुरु कार्म्मुकम् ॥

सूत्र०—हे सामाजिक, राजा सबक परम बीभत्स देखिये मुनि रामक बोल।

विश्वामित्र—हे कौशल्यानन्दन ! तुहु कि निमित्त पेखि रहैछ ? उठह, ओहि धनुत सत्वरे गुण लगाव।

श्रीराम—(ऋषिक प्रणाम कय बोल) आहे मुनिराज ! हामु बालक, ओहि धनु वज्राधिक कठिन। इहात गुण दिते हामार सामर्थ्य कैचन होइ ? तथापि तोहार आज्ञा पालि यत्न करब। ये धनुत गुण दिते महाराजा सबो नाहि पारल इहात हामात कोन लाज ?

सूत्र०—पीत वसन काचनि काचि लीलाये चलल।

राजासब—(विहसि बोलल) ओहि काहेक छवाल ! कि उपालम्भ भेलि।

सूत्र०—श्रीरामचन्द्र अजगव धनुक बाम हाते धरिकहु यैचे कुसुम मालाक उपरक खेपि पुनर्व्वार लुम्फि धरल; पेखि राजा सब मुख मलिन भेल।

श्लोक

धृते धनुषि रामेण सीता शङ्कित-मानसा।
अनन्तं कच्छपं पृथ्वी याचित्वेदं जगाद सा ॥

सूत्र०—हे सामाजिक ! येखन रामचन्द्र अजगव धनु धरल, सीता शङ्कित भावे चिन्तित भेलि।

सीता—हा हा हामार स्वामी परम सुकुमार नवीम वयस ! वज्राधिक कठिन महेशक धनु, इहात गुण दिते स्वामी जानो नाहि पारय ? हा हा पिता कि दारुण कर्म्म कयलि ! (ओहि चिन्ति पृथिवीक कातर कय बोलल) हे माता वसुमति ! तुहु थिर हुया रहब। हे पिता अनन्त ! तुहु भाल कये पृथिवी धरब। हे ईश्वर कूर्म्मराज ! तुहु अनन्त पृथ्वीक सबड़े धरब। तोरा सबक प्रसादे स्वामी यदि धनुत गुण दिते पारय, तब आमि अगतिर गति हबे।

सूत्र०—ओहि बुलि सीता स्वामीक समुखि निरिखि रहल।

श्लोक

रामस्तु शङ्कितां सीतां निरीक्ष्य कृपया प्रभुः।
प्रसह्य सज्यमकरोल्लीलयाजगवं धनुः ॥

सूत्र०—से कृपामय रामचन्द्र सीताक सकरुण भाव पेखि तत् काले लीलाये धनुत गुण लगावल से ईश्वर पुरुषरामचन्द्र हासि हासि अप्रयासे कर्ण मान टाने धनुत टङ्कार कयल। ठत्कार शवदे, मध्यभागे धनु भागि पचारे छिड़ल। यैचन वज्रपात भेल तद्वत् रामक महा महिमा पेखि राजा सब सचकित भेलह। सीता धनुभङ्ग पेखि आनन्दे मगन हुया यैच श्रीरामक माथे कुसुम माला दिये स्वामी बोलि बरल, तो देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग—माहुर।

ध्रु०—आनन्दे राजननिन्दनी हासे। रामक पाश चललि लय लासे ॥

पद— स्वामीक माथे माला परिधाइ। करि परणाम पावे परि माइ ॥
धरिकहु रमणी राम हासि तोलि। स्वामिनी कमिनीआञ्चोले ढोले ॥

सूत्र०—हे सामाजिक। सीता रामक स्वामी भावे धरिये कर्पूर ताम्बूल योगाइ आनन्दे रहल। ताहे पेखि राजा सब शोक कोपे मोहित हुया धनुबान धरिये रामक परम दर्पकय गरजे।

राजासब—आये ! काहेक छवाल ! आः हामार कन्या ओहि लिया याइ ! हाम सब राजाक धिक धिक्।

सूत्र०—ओहि बोलि धर मार रोल आन्दोल बहुत कयल।

श्लोक

श्रुत्वा सीताभवद्भीता भूपाल वीरभाषितं।
रुरोद वेपथुमती शोचन्ती च पतिं प्रति ॥

सूत्र० राजा सबक परम आन्दोल रोल शुनिये राजनन्दिनी भये परम आकुल भेलि। जानकी यैचे स्वामीक लागि विलाप कय बोल ता देखह शुनह। निरन्तरे हरि बोल हरि।

सीता— हा हा विधि, हामार कि कपाल मिलिल ! हरि हरि, राम स्वामी परम सुकुमार नवीन वयस, सङ्ग सोदर मात्र सहाय । ओहि परम निकरुण दारुण राजा सबके कँचे युद्ध जिनिब ? हा हा दैव विधि कोन अपराधे हामाक वञ्चल !

सूत्र०— ओहि बोलि जानकी येचे स्वामीक विलाप कयल, आहे सामाजिक लोक ता देखह शुनह । निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग गौरी—विषमताल ।

ध्रु०— नाइ नाइ चेतन तनु नयने झुरे वारि ।
विलपति भाइ पिउक लाइ तापे परि कुमारि ॥

पद— पुरब जनम पुइन परम पावल पहु ओहि ।
वङ्किम विधि हातक निधि हरे अभागीक मोहि ॥
दुर्लभवल्लभागिया आकुल करतु हृदि हामारि ।
हरि हरि स्मरे स्वास फोकारे पहुक मुख निहारि ॥

श्लोक

भीतां सीतां ततो रामः; निरीक्ष्य कृपया प्रभुः ।
प्राह प्रियां समाश्वास्य मा भैः स्थिते मयि ॥

सूत्र०— प्रियाक परम सन्ताप निरेखि रामचन्द्र बहु भेलि प्रियाक धरि बहु आश्वास कय बोलल ।

रामचन्द्र—हे प्राणप्रिये ! तुहु काहेक भय करह ? ओहि राजा सब हामार आगु कोन हय ? येचे सिंहक आगु बालक हरिण । हामाक बाण प्रहारे एहि क्षणे पलायब । तुहु आजु कौतुक देखह ।

सूत्र०—ओहि आश्वास करिये रामचन्द्र धनुक टङ्कार करिये राजा सबहक बोल ।

रामचन्द्र—आये पापी राजासब ! हामु धनु भङ्ग कय जानकी पावल, कि निमित्त इहात विपक्ष आचारह ? यत शकति थिक हामाक समर करह ।

सूत्र०—रामक वाणी शुनि नृपसब परम आटोपे टङ्कार कय बाण बरिषल । रामचन्द्र सोहि शरसब छेदिये राजा सबक गाते गाते बाण प्रहारि

हृदय भेदल । काहु राजाक उर कर काटि कटि पेलावल । काहुक बाहु कन्ध छेदल । अपर नृप सब मरण भये पलावल ।

श्लोक

निरीक्ष्य साक्षाद्रामस्य विजयं जनको मुदा ।
विवाहे विधिवत् वीरो राघवाय सुतामदात् ॥

सूत्र०—तदनन्तर रामचन्द्र परम विक्रम देखिये जनक राजाक मने अति आनन्द भेल । दूत पठाइ राजा दशरथक अति सत्वरे अनावल । राजा दशरथ पुत्रक विक्रम, सीताक प्राप्ति शुनिये आसिकहु जनकक परक कौतुके आलिङ्गि धरल, येचे नाचये लागल । राजा जनक विवाहक सम्भार मिलावल । विश्वामित्र कुशण्डि करिए होम आरम्भल ।

श्लोक

ऋषिः निरीक्ष्य सीतायाः रूप लावण्यमद्भुतम् ।
पुलकाङ्गः पपातोर्व्व्यां कामार्त्तो मूर्छितो यथा ॥

सूत्र०—मुख चन्द्रिका करिते सीताक भुवन मोहन रूप निरेखि ऋषि कामे आतुर भेलह हातक श्रव शुच खहि परल । शरीर कम्पि मुरुछि परल ताहे पेखि शिष्य गालव प्रबोध बोलल ।

गालव—हे गुरु तोहार कोन व्यवहार ? स्वस्थ हव ।

श्लोक

ततश्चेतन मालभ्य मुनिर्मन्त्रमुदीरयेत् ।
तदोद्वाह विधौ तस्मिन् उत्सवः सुमहान भूत् ॥

सूत्र ०तदनन्तरे मुनि चेतन लभिए विष्णु स्मरि हाते श्रुव धरिए विवाहक होम कराइते लागल । सोहि समये वर कन्याक केश एक ठाम करिये पानी ढालिते ब्रह्मा, इन्द्र रुद्रादि देवता सब येचन आनन्द मिलावल ता देखह शुनह । निरन्तरे हरिबोल हरि ।

गीत

राग सुहाइ—यतिमान ।

ध्रु०— रघुनाथ कौतुके करतु विवाह ।
सुरपुर मिलल उत्साह ।

शम्भु स्वयम्भू गुण गावे । इन्द्र मृदङ्ग रङ्गे बावे ।।
बरिषे कुसुम सुर रामा । पूरल सब मन कामा ।।

सूत्र० –ऐचन परम महिमा आनन्दे सीताक बियाह दिये राजा जनक यत सर्व्वस्व पारल सब रामक यौतुक देहल । दशरथ राजाक बहुत सम्मान कय अयोध्याक लागि बरकन्या पठावल ।

श्लोक

ततोऽति-कौतुको रामः प्रियया सह सीतया ।
ससोदरो मुदाभ्राजदयोध्याम्प्रययौ पुरिम् ।।

सूत्र० –तदन्तर प्रिया सीता सोदर सहिते श्रीराम न्द्र यैचे अयोध्या चलल, हे लोक ता देखह शुनह; निरन्तरे हरि बोल हरि ।

गीत

राग आढियाली-यतिमान ।

ध्रु० — करतु कौतुके चलतु रमया रमणी सङ्गहि जाइ ।
नील घने यैच बिजुरि उजुरि कुञ्जर गमनी माइ ।।
पद — कनक कङ्कन झनके झमके टमके कय लयलासः ।
पिउक पेखि मुख आखि मुदि रहु लज्जित इषत् हास ।
मत्त मातङ्ग सङ्गे यैचन तरुणी करिणी आवे ।
जय जय रव चौदिशि उत्सव कृष्ण किङ्करे गावे ।।

श्लोक

ततः आगत्य तरसा भार्गवो भ्रुकुटि मुखः ।
स्कन्धे निधाय कठिनं कुठारं राममब्रवीत् ।।

सूत्र० —ऐचन महोत्सवे रामचन्द्र सीताये सहिते चलैछे । तदनन्तर महेश गुरुक धनु भङ्ग शब्द शुनिये परम क्रोधे परशुराम प्रचण्ड मूर्त्ति हुया स्कन्धे कुठार धरि कहु रह रह बोलि रामचन्द्र आग बेढ़ल ।

परशुराम —अरे बेरटक पुत्र ! मेरा गुरुक धनुभंग कय तोहो कहे याव ? परशुरामक कथा तोहो जानये नाहि ? हामु एकविंशतिवारे भूमि भ्रमिये सब क्षत्रियेर मुण्ड मारलो । से कारणे कुठार मलिन भेल अः आजु तोहोक स्कन्ध रुधिरे निका करबो ।

सूत्र० —ओहि बुजि बाहु काड़ुरि परम चटि चर्पटि करिये थिक ।

श्लोक

तन्निशम्याभवद्भीतः भयाद्दशरथो नृपः ।
स्कन्धे च बसनं कद्ध्वा भार्गवस्य पद्ऽपतत् ।।

सूत्र० —परशुराम क्रोध भावना पेखि राजा दशरथ प्राण अन्तरीक्ष भेल । हा हा सर्व्वनाश भेलो बोलि गले कापर बान्धि भार्गवक पावे पड़िये अनेक कातर कयल ।

दशरथ — हे प्रभु परशुराम ! हामार पुत्र रामचन्द्र बालक मति । इहार दोष मरष गोसाञि । तोहारि चरणक दास भेलो । माथे खेर धरो हामाक पुत्र दान देहु । यब नाहि क्षमा करब तब पुत्रक छोड़ि हामाक माथा लेहु ।

सूत्र० —ऐचन अनेक कातर कयल । तबहु भार्गव क्रोधे बहुत बल्कय । ताहा पेखि दशरथ राजा हृदय मुष्टि हानि बाहुरि रामचन्द्रक गले बान्धि धरि कहु बोलय ।

दशरथ —हा हा पुत्र अन्तकक हाते पड़लि । तोहारि दरसन आजु परिछेद भेल ।

सूत्र० —ओहि बोलि दशरथ बहुत बिलाप कयल ।

श्लोक

बिलोक्य भार्गवं भीता सीता क्षोपतमानसा ।
रुरोद पतिमालिङ्ग्य हा हतास्मीतिवादिनी ।।

सूत्र० —तदन्तरे कालान्तक प्राय परशुरामक निरिखि सीताक शरीर कांपे ।

सीता —हा हा सकले गुण भाजन स्वामी हामार आजु काहेक देलह; बिहिक बिड़म्बना कि भेल !

सूत्र० —ओहि बुजि स्वामीक आलिङ्गि धरिये यैचे बिलाप कयल ताह देखह शुनह ।

गीत

राग गौरी—यतिमान ।

ध्रु० — हरि हरि रमणी करये पड़ि माइ ।
पेखि परम पिउ जीव यैचे याइ ।।
पद — पावल कत पुण्ये पहु हामि ।
हाते हरये बिहि नवनिधि स्वमी ।।
नीर झुरये फुकारये घने श्वासा ।
बङ्क बिधाता कयल सब नाशा ।।

श्लोक

सन्तापं प्रेक्ष्य सीतायाः भक्तायाः भक्तवत्सलः ।
प्रियां प्रोवाच परमां पाणिना मार्ज्जयन्मुखम् ॥

सूत्र०—भक्ता सीताक ऐचन परम सन्ताप देखिये श्रीरामचन्द्र होते प्रियाक मुख मोचल । सप्रेम वाणी बुलि आश्वास कयल ।

रामचन्द्र—हे प्रिय ? ओहि वनवासी ऋषिक दर्प देखिये तोहारि तरास मिलल । ओहि हामाक आगु कोन पतङ्ग ? देख एहि क्षणे दुष्ट द्विजकदर्प चूर करब । हे प्राणप्रिये ! आजु कौतुके देखह ऋषिक मुण्ड मुण्डाञो ।

सूत्र०—तदनन्तर पुनर्व्वार दशरथ दशने तृण धरिये परशुरामक आगे परल ।

दशरथ—हे ऋषिराज ! हामाक पुत्र दान देहु । तोहारि पाये धरैछि ।

परशुराम—(क्रोधे दशन चबिये राजाक तर्जिये बोल) अये कुठार ! रेणुका माताक कण्ठ छेदिते तुहो पारल, आजु दशरथ कुमारक प्रति तोहो अति शान्त भेलि ! आः आजु तोहार धिक्कार, हामार धिक्कार थिक !

सूत्र०—ओहि बोलि कुठार तुलि श्रीरामक निरेखि माथा झङ्कारि कुठार ऊर्द्धक खेपिये पुनु लुफ्फि धरि कहु कुठार निरेखि बाहुत कामोर देखह । शरीर काम्पे ।

श्लोक

विश्वामित्रस्तदागत्य भार्गवं प्राह कोपतः ।
अरे द्विज कुलाङ्गार मत् शिष्यं हन्तुमिच्छसि ॥

विश्वामित्र—अये दुष्ट द्विजाधम ! हामार परम शिष्य रामचन्द्र । आहेक बधो धम तुहु भेलि ! अये यत सकति थिक आजु हामाक युद्ध देहु । तो ारि दर्प चूर करब ।

सूत्र०—परशुराम महाकोपे दण्ड धरल । विश्वामित्रो दण्डधरि धावल । दोहोर दण्ड प्रहारक चोटे चूर भेल । तदन्तर चबड़ि धरिये युद्ध कयल । प्रहारक चोटे दोहो चबड़ि छिड़ि परल । तदनन्तर बाहुयुद्ध कयल । दोहो दोहोक धरियें पड़ि गागरय । दोहो रुधिर परिधान चर्म्म खसि पड़ल । विष्णुक अंश अजय वीर्य्य परशुराम ताहेर पराक्रम सहये ना पारि विश्वामित्र भङ्ग मानि प्राण रक्षा कये पलावल । परशुराम पुनर्व्वार कुठार तुलि श्रीरामक गर्ज्जय ।

श्लोक

लक्ष्मणः प्रेक्ष्य तत्-दर्पं राममाह सकोपतः ।
आज्ञापय बधे चास्य दुर्ज्जनस्याततायिनः ॥

सूत्र०—ऋषिक परम दर्प देखिये लक्ष्मण कोपे वस्त्र काचि कहु रामक प्रणाम कये बोल ।

लक्ष्मण—हे रघुनाथ ! ओहि आततायि दुष्ट द्विजक बधे कोन दोष थिक ? हामाक आज्ञा करह, आहेक प्राण छोड़ाञो ।

सूत्र०—ओहि बोलि धनुष टङ्कारि ऋषिक समुख होइ लक्ष्मण दशरथक बोल ।

लक्ष्मण—हे पिता ! ओहि क्षत्रियघातकी परमपातकीक कत कातर करैछ । सत्वर अन्तर हुव । आहेर मुण्ड मारो ।

सूत्र०—ताहे पेखि राम हासि लक्ष्मणक पाछु कय बोलल ।

रामचन्द्र—अये भाया ! तुहु बालक, रह रह । ओहि दुष्ट द्विजक हामो दण्ड करबो । तुहु सुखे युद्ध देखह ।

श्लोक

धनुष्टङ्कारमकरोत् भार्गवं भीषयन् प्रभुः ।
तिष्ठ तिष्ठेति तम्प्राह नयाम्यद्य यमालयम् ॥

सूत्र०—शारङ्ग टङ्कार कयकहु श्रीरामचन्द्र परशुरामक समुख हुया बोलल ।

रामचन्द्र—अये दुष्ट द्विजाधम ! क्षत्रिय सब मारि तोहो गरब करैछ ? तोहार माता रेणुकाक काटिये पाप आचरल । सोहि कथा कहिया हामाक भीति देखाब ? रह रह आजु तुहु यमपुर देखब । यत शकति थिक हामाक समुख हुया रह ।

सूत्र०—हे सामाजिक ! श्रीरामक धनुटङ्कारे परशुराम हृदय विदारल । परम तरासे सब शरीर काम्पे । हातक परशु खसि पड़ल । प्राणक कातरे धँचे पलावल, आहे लोक ता देखह ।

गीत

राग कामाड़ा-परिताल ।

सू०— धावे धरि शारङ्ग रघुनाथ ।
तरासे भृषिक कम्पय पाय हात ॥

पद—परशु खसल दूर भेल राग। पड़ल दण्डवते रामक आग ॥
राखहु तोहारि अंश हामु राम। दशने खेर धरो करो परणाम ॥

सूत्र०—परशुराम श्रीरामक आगे पड़िये बहुत कातर कय बोल।

परशुराम—हे प्रभो श्रीराम ! तोहो परम ईश्वर। हामु तोहारिसे अंश।
इहा ना जानि दर्प कयलो। हामाक दोष मरष गोसाञि।

सूत्र०—भार्गवक कातर पेखि लक्ष्मण सीता बहुत हास्य कयल।

श्रीराम—(विहँसि बोल) हे भृगुपति राम ! हामार परम अमोघ बाण तोहारि बध निमित्त उद्यम भेल। इहाक सम्बरण करिते न पारि।
(ओहि बोलि, बाणा आकर्ण पूरल।)

परशुराम—(दश नख मुख लैये तरासे) हे स्वामी ! तोहार धर्म्मक पुत्र भेलो हामाक प्राण दान देहु।

श्रीराम—(विहँसि बोल) आये भार्गव ! तुहु निर्भये रह। तोहार जीव राखलो। किन्तु हामार बाण व्यथ नाहे। तोहार स्वर्ग पथ छेद करोहो।

सूत्र०—ओहि बोलि श्रीराम गगनक लागि बाण छेरल। परशुराम श्रीराम आलिङ्गि बोलल।

परशुराम—हे बाप ! तोहारि प्रसादे आजु प्राण रहल। आः पुनर्व्वार उपजल।

सूत्र०—ओहि बुलि परशुराम तपोवने प्रवेशल।

श्लोक

निर्जित्य भार्गवं रामं प्रियया सह राघवः।
पुरीं अयोध्यामाविशत् मातृभिः सम्प्रवेशितः॥

सूत्र०—हे सामाजिक ! भार्गव रामक जिनिये श्रीरामचन्द्र प्रिया सहिते अयोध्या पुर प्रवेशल। रामक माता कौशल्या श्रीरामक विजय बात सुनिये अनेक स्त्रीसब सहित परम मङ्गल गीत आनन्दे बाजाना बजाइ बरकन्दार हात एक ठाम करिकहु महोत्सवे गृह प्रवेश करावल। आसने बैठाइ रामक सीताक माथे दुर्व्वाक्षत सिञ्चारि आशीर्व्वाद कयकहु परम उत्सुक कौशल्या आनन्दे नृत्य कयल। रामक ऐचन विवाह महोत्सव सम्पूर्ण भेल।

श्लोक

भृशं तुष्टमना रामः सम्प्राप्य परमां प्रियां।
तया कुर्व्वन कामकेलि रेमे मणिमये गृहे॥

सूत्र०—त्रिभुवनमोहिनी पदुमिनी जानकी सीताक लभिकहु, श्रीरामचन्द्र आनन्दे मगन हुवा मणिमय रत्नमन्दिरे प्रवेशिये सीताये सहित यैचन परम कामकेलि कय रहल ता देखहु सुनहु। निरन्तरे हरि बोल हरि।

गीत

राग कल्याण-खरमान

ध्रु०—ए कह रमया, कह रमया रस केलि।
काञ्चुरी छुरि फुरे कुच कुच रति कौतुके करा अलि॥

पद—नव धर धरिये अधर मधु चञ्चल ! लोचन मुदि रहु माइ॥
करत सुरत मत्त मातङ्ग गामिनी। कामिनी यामिनी याइ॥
चञ्चर चिकुर निकर कर कङ्कन झनकित रतनकु माला॥
श्रमजल बिन्दु इन्दु मुह सोहे मोहे पड़ल धरबाला॥
परम रसिक गुरु छिरि शुक्लध्वज राजा नृपति प्रधान॥
जयतु जयतु नित्य ईश्वर कृष्णक केलि लीला रस जान॥

सूत्र०—ऐचन परम रसे केलि कय सीताक मनोरथ पुरि रामचन्द्र अनुदिने आनन्द मन्दिरे रहल।

श्लोक

श्रीराम विजयं नाम नाटकं पूर्णताङ्गतम्।
श्रीकृष्ण पादपद्मस्य प्रसादेन सुनिश्चितम्॥

सूत्र०—श्रीकृष्ण पादपद्म प्रसादत श्रीरामविजय नाम नाटक सम्पूर्ण भेल।

मुक्ति मङ्गल भटिमा

जय जय ईश्वर राघव राम। पूरल यो जानकी मनकाम॥
जग जन जीवन सोहि मुरारि। मुकुति मङ्गल करतु तोहारि॥
योहि पालि पिताकेरि आश। सीता सहित खपल बनवास॥
साधल जय यो राकस मारि। सोहि करतु नित्य मुकुति तोहारि॥

बालि घालि सुग्रीवक पाट। देलहु यो लये बानरक ठाट ॥
बान्धल सेतु पयोधिक बारि। सोहि करतु नित्य मुकुति तोहारि।
ठाटे बेढ़ल चौदिक लङ्का। राकस सोक मिलावल शङ्का ॥
छेदल यो रावण केरि माथ। मुकुति करतु सोहि रघुनाथ ॥
आवल सङ्गें बानरक ठाट। राजा भेलि अयोध्याक पाट ॥
यो जानकी मन पूरल मुरारि। मुकुति मङ्गल करतु तोहारि ॥
रामक परम भकति रस जाना। श्रीशुक्लध्वज नृपति प्रधाना।
राम विजय यो करावत नाट। मिलहु ताहेक वैकुण्ठक बाट ॥
रामक चरणे शरण लेहु जानि। सब अपराध मरष तोहो स्वामि ॥
कृष्ण किङ्कर शङ्कर बोल। कह सब नर अब हरि हरि रोल ॥

●